प्राक्कथन

स्त्री विमर्श सहज एवं बौद्धिक विमर्श नहीं है, यह सामाजिक परिवर्तन का माध्यम है। यह विमर्श स्त्री संबंधी समूची मानव जाति के उत्थान का पक्षधर है। यह समाज में सामाजिक समरसता बनाने के सरोकार से संबंधित है ना कि विद्वेष फैलाने के लिए है। स्त्री विमर्श से आशय स्त्री-पुरुष में प्रतियोगिता नहीं है, बल्कि यह एक ऐसे परिवर्तन का सूचक है जो कि सारे साहित्य को नई दृष्टि देने का पक्षपाती है। साहित्य के क्षेत्र में नारी संबंधी संवादों व बातचीत आदि में ही स्त्री विमर्श पाया जा सकता है।

हिंदी साहित्य में लेखिकाओं की एक बड़ी दुनिया है , जो कि आज के समय में पुरुषों से कमतर नहीं है। ऐसी ही लेखिका है नीरजा माधव जो अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री के गुणों को चित्रित करने में व नारी की प्रताड़ना के खिलाफ आवाज उठाने में आगे है। नीरजा माधव जी एक सशक्त रचनाकार है। उनकी रचनाओं में भावना व विचार प्रधान होते हैं। समाज के हर वर्ग के पात्र व जीवन के हर पहलू का वर्णन उनकी रचनाओं में मिलता है। उनके उपन्यास व कहानियों में समाज के पिछड़े वर्ग का चित्रांकन मिलता है। लेखिका भारतीय संस्कृति की पोषक होने की वजह से उनकी रचनाओं में भी भारत को गौरवशाली बनानेवाले तत्वों को निरूपित किया गया है। इसी के साथ समाज के विभिन्न तबक्के को अपने लेखन से आवाज दी है। चाहे वे तृतीय प्रकृति के लोग हो या पुरुषवादी मानसिकता से परेशान स्त्री हो, सभी की आवाज सार्थक और यथार्थ तरीके से उठाने का कार्य निरजाजी ने किया है।

आधुनिक समय की महिला रचनाकारों में नीरजा माधव एक सशक्त लेखिका है। यह बड़ी लेखिका इसलिए है क्योंकि उनके विषय का क्षेत्र बहुत व्यापक है। उनके विषय का प्रस्तुतीकरण बहुत सलीके से होता है। वह बहुत क्रांतिकारी तरीके से अपनी बात कहती है, परंतु जब रचना समाप्त होती है तो पाठक के मन व मस्तिष्क में स्वाभाविक तरीके से प्रश्न उठते हैं। पाठक के अंदर विषय को लेकर चिंतन प्रारंभ होना ही रचना की सफलता है।

अध्ययन सामग्री के रूप में मुझे नीरजा माधव- सृजन के आयाम यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन 2015 में प्रकाशित पुस्तक प्राप्त हुई। बृजबाला द्वारा संपादित नीरजा माधव की कहानियों में मध्यवर्ग व डॉक्टर अनिल प्रभाकर कांबले द्वारा 2021 में पुस्तक के रूप में प्रकाशित शोध प्रबंध प्राप्त हुए हैं।

नीरजा जी ने अपने उपन्यास व कहानियों में तरह कई तरह की नारी समस्याओं का निरूपण किया है। इस समस्या में ग्रामीण, नगरीय, कामकाजी, गरीब-अमीर हर वर्ग की स्त्रियों को आवाज दी है। नारियों की प्रताड़ना के खिलाफ आवाज उठाने का इनका दायरा वैश्विक स्तर तक है। तिब्बत से विस्थापन के बाद क्यों वहाँ की महिलाओं की आवाज को भी उन्होंने सशक्त तरीके से उठाया है। अतः उनके कथा साहित्य को केंद्र में रखते हुए नारी समस्याओं का अध्ययन करना ही मेरा उद्देश्य था।

मैं अपने शोधप्रबंध "**नारी विमर्श के परिप्रेक्ष्य में नीरजा माधव का कथा साहित्य: एक अध्ययन**" में परम सम्मानीय नीरजाजी का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्हों ने मुझे इस विषय में अध्ययन करने के लिए प्रेरणा प्रदान की। मैंने अपने इस शोध प्रबंध में उनकी कहानियों और उपन्यासों का अध्ययन कर इसमें पायी जाने वाली स्त्री समस्याओं में स्त्री विमर्श पर प्रकाश डालने की कोशिश की है।

****